अहिरावणलीला

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,
बम्बई

॥ श्रीः ॥

अहिरावणलीला

अर्थात्

रामहरण हनुमानविजय अरु सियासँदेश हनुमाननाटक रामकरुणानाटकसहित.

श्रीमद्वैष्णव विष्णुउपासक श्रीरामदासजी रचित.

संस्करण- सन् १९९४, सम्वत् २०५१

मूल्य ६ रुपये मात्र

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४

अवधिपुरनिवासी भक्तजनविलासी ।
तासु आज्ञाभिलाषी आगरास्थानवासी ॥
राधाकृष्णप्रकाशी हरिजनसुखराशी ।
प्रेमविश्रामकाशी वेधनी मोहपाशी ॥

Printed by Shri Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass proprietors Shri Venkateshwar press Bombay-400 004. at their Shri Venkateshwar press, 66, Hadapsar Industrial Estate, Pune-411013.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

रामहरण अहिरावणलीला.

छन्द गीतिका चौपइया ।

अहिरावणको बोलि कही सुनि रावण भाई ॥ राम लखन दोउ वीर तिन्हैं तू हर ले जाई ॥ अहिरावण इह सुनतही मगन भयो ततकाल ॥ माया करि हर लै गयो तिनको निशि पाताल ॥ कुमर ये कौंनके ॥ १ ॥ भोर भयो सब जगे वीर बानर दलमाहीं ॥ सूनों साज निहारि कुमर कहूं दीसत नाहीं ॥ भयो कुलाहल कटकमें कहूं न दीसे वीर ॥ बलहारे वासर बली विना राम रणधीर ॥ कुमर ये कौंनके ॥ २ ॥ जामवंत सुग्रीव हनू अंगद नल नीला ॥ दधिमुख दुविध मयंद केशरी सहज सुशीला ॥ सोचतही सब रहि गये सेनापति पछितात ॥ को लै गयो कहां गये काहूकी न वस्यात ॥ कुमर ये कौंनके ॥ ३ ॥ हनूमानसों कहैं तात तुम होउ सहायक ॥ तुम विन

कारज कठिन कौंन करिवे हैं लायक ॥ लाओ जाय जहां गयेको लै गयो कुमार ॥ राखि प्राण हनुमान तू सबके प्राण आधार ॥ कुमर ये कौंनके ॥ ४ ॥ सुमिरि राम रणधीर वीर हनुमान सिधायो ॥ गिरि वन कंदर खोजि खोज कतहूं नहिं पायो ॥ निर्जन वनमें जाय जब बैठि गयो तरुछांह ॥ द्वै पक्षी बतरात हैं ता तरुवरके माँह ॥ कुमर ये कौंनके ॥ ५ ॥ कान दिये हनुमान सुनत है तिनकी वानी ॥ सोई वात बतरात रातिमें दोऊ प्रानी ॥ कहत गीधसों गीधनी मैं हूं गर्भ सुभाय ॥ मनुष मांस मोकों अबै देहु कहूंते लाय ॥ कुमर ये कौंनके ॥ ६ ॥ अहिरावण लै गयो राम लक्ष्मणहि चुराई॥ देवीकी बलि देन कहै है दोऊ भाई ॥ जहां जाय मैं प्रातही तोहि देउँगो लाय ॥ तिनको आमिष खाय जो अमर अंग ह्वै जाय ॥ कुमर ये कौंनके ॥ ७ ॥ इह सुनिकें हनुमान हरषि विस्मय दुख पायो ॥ उठ्यो तुरत अकुलाय धाय पातालहि आयो ॥ अहिरावण पुर पौरि-पे मकरध्वज बलवान ॥ ताहि निदरि लघुरूप धरि तुरत चले हनुमान ॥ कुमर ये कौंनके ॥ ८ ॥ मकरध्वज उठि

कही हेरि हठके हनुमाना ॥ तोहि न देहों जान मोहि अहिरावण आना ॥ अनुरूप लखि पूंछतें हनूमान सकुचाय ॥ अरे तात तू कौनको बंदर वेगि वताय ॥ कुमर ये कौंनके ॥ ९ ॥ हनूमानको पूत दूत अहिरावण केरो ॥ मैं राख्यौ या ठाम नाम मकरध्वज मेरो ॥ जान न काहू दहुँ मैं पुरभीतर अपु जान ॥ आयो ताहि वतायकें हेरि हँसे हनुमान ॥ कुमर ये कौंनके ॥ १० ॥ मेरे तौ सुत नहीं कहै तू भयो कहांतें ॥ मैं अब देहुँ वताय सबै समझाय जहांतें ॥ लंक लगाई जा समय परे सिंधुमें धाय ॥ पऱ्यौ पसीना जलधिमें गई मीन तिहि खाय ॥ कुमर ये कौंनके ॥ ११ ॥ मछरी तनते प्रगट भयो मकरध्वज नामा ॥ अहिरावण गहि मोहि लाय राख्यौ इहि ठमा ॥ हनूमान सुनिकें कही सही सही है वात ॥ पल पल होत अवेर अब मोहि जान दे तात ॥ कुमर ये कौंनके ॥ १२ ॥ मेरे ईश उदार नाथ तेरो हर लायो ॥ तैं कहुं देखे तात खोजमें तिनके आयो ॥ जौ तू सुत मेरो सही करि अब कछू सहाय ॥ वेगि गैल दे मोहि अब अल्प कल्प सम जाय ॥ कुमर ये कौं-

नके ॥ १३ ॥ मकरध्वज कर जोरि कहै तुम पिता हमारे ॥ कठिन लगत हैं मोहि वचन ये नरम तिहारे ॥ आज्ञा विनु अहिरावकी धारे न देहुं नहिं पांय ॥ पचि-हारे हनुमान हठ ताकों बहु समझाय ॥ कुमर ये कौंन-के ॥ १४ ॥ निदरि चले हनुमान रोस करि ताहि रि-साई ॥ मकरध्वज करि कोप हेरि हटके सो जाई ॥ भिरे युगल योधा दोऊ कपिकुलमें बलवान ॥ लरत धरत हारत नहीं मकरध्वज हनुमान ॥कुमर ये कौंनके ॥१५॥ करत युद्ध अति घोर मल्ल मुष्टिक उर मारें ॥दोऊ सबल सजोर कोप करि करि हुंकारें ॥ जीत्यौ जात न जानि सुत तब हनुमंत रिसाय ॥ पकरि पूंछ हनुमंतने दई खं-भसे बांधि ॥ कुमर ये कौंनके ॥१६॥ अतिलघु रूप बनाय जाय पुर लखे न काऊ ॥ जहां तहां फिर आय पाय सुधि कियो उपाऊ ॥ देवी मंदिरमें दुरे धरे सीस-पर पाय॥सिंहासन बैठे बली भ्यानक भेष बनाय ॥ कुमर ये कौंनके ॥ १७ ॥ अहिरावणकी नारि निरखि सुंदर दोउ भाई ॥ अपने पतिसों कहत तोहि कैसी बनिआई॥

हर लायौ सुत कौंनके ये दोउ राजकुमार ॥ मात पिता मरि जायँगे इनके प्राण अधार ॥ कुमर ये कौंनके ॥१८॥ करि आवो अब वेग जहांते तुम हर लाये ॥ मानहु मेरी बात करो मति निर्दय दाये ॥ कहा करोगे राखिकें कोमल कुमर किशोर ॥ रामचंद्र युगचंद्रसे लोचन लोक चकोर ॥ कुमर ये कौंनके ॥ १९ ॥ अहिरावण हँसि कहै वैर रावणको लैहों ॥ इन्हैं पकरि लै जाय द्वार देवी बलि दैहों ॥ कुंभकरण रणमें हत्यो इंद्रजीत अधिकाय॥ देख तके बालक बली रणमें बुरी बलाय ॥ कुमर ये कौंनके ॥ २० ॥ मारचौ बाण विराध बाण मारीच पछारचो ॥ खर दूषणको मारि डारि वालीको मारचो ॥ वानर दल बल जोरिकें लंका घेरी आय ॥ अब आये मो दावमें देवी देहु चढाय ॥ कुमर ये कौंनके ॥ २१ ॥ पहिलें अनियत करी असुर सीता हर लायो ॥ दूजें अनियत करी गयो कपि बांधि मँगायो ॥ तीजी अनियत अतिकरी दीयो बंधु विदारि ॥ अब अनीयत तुम करत हो हर लाये असुरारि ॥ कुमर ये कौंनके ॥ २२ ॥ बारबार कर जोरि कहै अहिरावण रानी ॥ तू मति होय

अजान अमर अतिपति अज्ञानी ॥ तैं जु कही इतने मरे मेरे राम रिसाय ॥ कुटुमसहित रावण गयो तू काहे-को जाय ॥ कुमर ये कौंनके ॥ २३ ॥ करि आदर कर जोरि पाँय परि विनय सुनाओ ॥ वरिआवोगे नाहिं नाथ मति वैर बढाओ ॥ ये सुख मंदिरमें बढे सुख देख्यौ कछु नाहिं ॥ जात घरी इक घाममें बदन कमल कुम्ह-लाय॥ कुमर ये कौंनके ॥ २४ ॥ कोटि काम अभिराम श्यामतन गौर शरीरा ॥ शोभा रूप उदार सहज सुकुमार गँभीरा ॥ वीर शांति शृंगारके दीसत हैं सिरताज ॥ तिन हर लायो निर्दयी दई न आई लाज ॥ कुमर ये कौंनके ॥ २५ ॥ इनकों अब लै जाउ जहांके तहाँ करि आवो ॥ तिनते क्षमा कराय जाय रावण सम-झावो ॥ सीता दै पांयन परो चूक क्षमा करवाय ॥ नातर बचौ न बावरे रणमें राम रिसाय ॥ कुमर ये कौंनके॥२६॥ पाणि जोरि मैं कहों मानि पति ज्ञान हमारो ॥ बार न बांको होय कछू बिगरै न तिहारो ॥ मैं देख्यौ है स्वप्नमें रावण दक्षिण जात ॥ करत बिभीषण राज मोहि लंका परी लखात ॥ कुमर ये कौंनके ॥ २७ ॥ अहिरावण

हँसि कहै कही तेरीको मानें ॥ सांचो नारि सुभाव निडरमें डर करि जानें ॥ परपुरुषारथ देखिकें स्वारथ कहै बनाय ॥ छल बल छिद्र छिपाय करि नारि सुभाव न जाय ॥ कुमर ये कौंनके ॥ २८ ॥ मंगलमें करि मौन मगन सुखमें दुख ठानें ॥ अनकहनीको कहै कपटपर निपट सयानें ॥ निर्दय उर कोमल कठिन मनमें हारि न जीत ॥ को जानें करि है कहा निडर नारि भयभीत ॥ कुमर ये कौंनके ॥ २९ ॥ पकरि खिलावै सांप जेवरीसों डर जानें ॥ सूलीपै चढि जाय दरद कांटेको मानें ॥ पूंछ मरोरै सिंहकी देखें स्यार सक्याय ॥ लांघि न जानें डेहरी पर्वतपै चढि जाय ॥ कुमर ये कौंनके ॥ ३० ॥ घरमें जात डराय धाय कूवामें गिरई ॥ पोखर न्हात सक्याय सात समदरमें तिरई ॥ गली गिरारें डर करै निधरक फिरै उजारि ॥ लाज करै सिरताजकी नाचै अंग उघारि ॥ कुमर ये कौंनके ॥ ३१ ॥ बिल्लीते भय करै मारि नाहरको डारै ॥ अबला आप कहाय सबलके सींग उखारै ॥ पतिकों मारै खार दै जार पुरुष प्रण देय ॥ अपनों देय न नेंकहू औरनको मन लेय ॥ कुमर ये

कौंनके ॥ ३२ ॥ डाकिन बनि बलि खाय सरस भोजन नाहिं भावे ॥ घर घर प्रण तजि जाय निडर ह्वै नारि कटावे ॥ घरी इक घाम सहे नहीं संग सती है जाय ॥ बांधे स्वर्ग पतालको अवला बुरी बलाय ॥ कुमर ये कौंनके ॥ ३३ ॥ सोहत सदा अशुद्ध बुद्धि शठ हठ करि जानें ॥ जड़मति परपति देख सहज संतोष न मानें ॥ अमृत पी उलटी करै डारै जहर पचाय ॥ निज पतिकी निंदा करै परपति लखि ललचाय ॥ कुमर ये कौंनके ॥ ३४ ॥ चलै मान मन रहै सदा स्वारथ मन भावै ॥ जहां न सींक समाय तहां कोल्हू लुढकावै ॥ पात भार सहि ना सकै सिलकों लेहि उठाय ॥ अंग अंग औगुण भरी ताकों को पतियाय ॥ कुमर ये कौंनके ॥ ३५ ॥ करै औरते और कछूते कछू बनावै ॥ सदा रहै मन मैल गैल कोऊ नाहिं पावै ॥ नारिचरित और पुरुषके भाग्य न जानत कोय ॥ मानसकी कछु ना चलै दैव न जानत होय ॥ कुमर ये कौंनके ॥ ३६ ॥ पतिअज्ञामें रहै सहै दुख देह जरावै ॥ जावै पूत सपूत प्रेम पल मंगल गावै ॥ है सबही औगुण भरी सगुन

सलौंने चारि ॥ मंगल गावै सर चढै सुत जावै पति नारि ॥ कुमर ये कौंनके ॥ ३७ ॥ सुनि शठ नारि उतार अरिनकी करत बडाई ॥ सुघर भूपसुत कुमर रूपकों देखि लुभाई ॥ मैं देखे सीखे सुने नटखट नारि सुभाय ॥ अपने स्वारथकी कहै छल-बल बात बनाय ॥ कुमर ये कौंनके ॥ ३८ ॥ इतनी कहै रहि गयो असुर अहिराव अमानी ॥ कहन लगी कर जोरि बहुरि अहिरावण रानी ॥ तैंजु कही पति नारि गति सति हैं सबही बात ॥ नारि विना नर ना कछू याकों को पतियाय ॥ कुमर ये कौंनके ॥ ३९ ॥ नारीते नर निकरि पकरि करके हरि लावै ॥ नारीते नर निकरि महाबलवीर कहावै ॥ नारीते नर ऊपजे दाता सूर उदार॥ नारिविना नर जगतमें होत फिरत है ख्वार ॥ कुमर ये कौंनके ॥ ४० ॥ जगत जीत जिन लियो सुरासुर भुजबल हारे ॥ ऐसे नरवर निठूर नारि नैंननिसों मारे ॥ कान ऐंटिके हरिनके दिग्गज दंत उपारि ॥ पर्वत फारे पकरिकें ते हारे लखि नारि॥ कुमर ये कौंनके ॥४१॥नर विनु नारी कहा नारि विनु नर कछु नाहीं ॥ मिलि दोउ

वनको संग रंग उपजै रसमाहीं ॥ नारि पुरुष करता करै एक संग उपजाय ॥ तिनहींते संसार है सब दीयो जगत जनाय ॥ कुमर ये कौनके ॥ ४२ ॥ नर नागर ये कुमर तिन्हें तू नरमति जानें ॥ धरें मनुष अवतार अमर ये पुरुष पुरानें ॥ तू जानत इनको कहा मैं जानत कछु भेव ॥ अखिल ईश करता कुमर सब देवनके देव ॥ कुमर ये कौनके ॥ ४३॥ यह सुनिकें हँसि कहै असुर सुनि नारि नवेली ॥ भरमाई कहुं भूतराति कहँ रही अकेली ॥ कै सुपनों देख्यौ कछू भरमि गई मनमाहिं ॥ नर वानरते तनकहू हम डर मानत नाहिं ॥ कुमर ये कौनके ॥ ४४ ॥ भरमि गई मैं नाहिं भरम तेरे तन छायो॥ सकल सुरासुर ईश ताहितें मनुज बतायो ॥ हर आने नर जानिकें दोऊ राजकुमार ॥ संहरतासुर अरि-नके मति भूले भरतार ॥ कुमर ये कौनके ॥ ४५ ॥ बहुत बकी है नारि मारि मैं तोकों डारूं ॥ देवीकी बलि देहुं महलते पहलें निकारूं ॥ करत बडाई अरिनकी जीभ लेहुं खिचवाय ॥ जानहुं मैं तू जायगी तिनके संग नसाय ॥ कुमर ये कौनके ॥ ४६ ॥ यह सुनि सोचत

वाल कालवश भयो भुलानों ॥ परी असुर मति चाल-
भालपै आय तुलानों॥ मैतिन चीपति सीसपै अव कित-
हूंते आय ॥ हौनहार वलवान है काहूकी न वस्याय ॥
कुमर ये कौंनके ॥ ४७॥ भोर भये अहिराज साज पूजा-
को कीयो ॥ जुरिकरि सवै समाज संग सेनादल लीयो ॥
ढोल दमदमा दुंदुभी वजे जुझारू झारि ॥ आगे करि
लीये कुमर चले सम्हारि सम्हारि ॥ कुमर ये कौंनके ॥
॥४८॥ देवीके दरवार जाय मठके पट खोले ॥ देखि
रूप विकाल असुर ह्वै रहे अवोले ॥ अहिरावण राजी
भयो देखि रूप विकाल ॥ कहन लग्यौ हमपै भई देवी
आजु दयाल ॥ कुमर ये कौंनके ॥ ४९ ॥ राजा विधि
सव लई धरी पकवान मिठाई ॥ भरिभरिकें करि कर
उठाय सवही कपि खाई ॥ देखि देखि कपि कर्मकों
अहिरावण मुसिकयाय ॥ आय भली वलि देखिकें देवी
देह वढाय॥कुमर ये कौंनके॥५०॥काढि काढि खल खड्ग
अगें आगें भये ठाढे॥घेरि रहे चहुं ओर वीर बांके बल वाढे
कहन लग्यो खल खिजि खरो अहिरावण वलखाय ॥
कहौ कुमर अब कौन है तुमको लेय छुडाय ॥ कुमर ये

कौंनके ॥ ८१ ॥ लक्ष्मण माहीं राम राम तन लखन निहारें ॥ कहत राम हनुमान आय अब खलदल मारें॥ यह सुनि ताही छिन उठे हनूमान हुंकारि ॥ महावीर घन गरजिकें धायो मंदिर फारि ॥ कुमर ये कौंनके ॥ ८२ ॥ लीने खड्ग छिनाय किते खल मारि भगाये ॥ केते करसों पकरि मुंडते मुंड भिराये ॥ अहिरावण सिर तोरिकें डारचो कुंड मझार ॥ भुजा उखारी सो परी रावणके दरबार ॥ कुमर ये कौंनके ॥८३ ॥ दोऊ तुरत उठाय कुमर कंधा धरि लीये ॥ दानव दल बल खंड मगन मनभाये कीये ॥ कहत भये पुरलोग सब बुरी करी अहिराय ॥ देंन कहे बलिकुमर ये देवी गईं रिसाय ॥ कुमर ये कौंनके ॥ ८४ ॥ अहिरावणकी नारि निकट आये दोउ भाई ॥ सकल भांति अपनाय चले सो अभय कराई ॥ मकरध्वजकों राज दे ताकी लाज गहाय ॥ लै आये कपि कटकमें कंधा कुमर चढाय ॥ कुमर ये कौंनके ॥ ८५ ॥ आनंदे सब लोग शोगसा पुरते छूटे ॥ नैंनानंद प्रवाह प्रेम पुल उरते फूटे ॥ अहिरावणके राजकी रजनी गईं विहाय ॥ शयन सरो-

वर कमल कुश खुले राम रवि पाय ॥ कुमर ये कौंनके ॥ ५६ ॥ जामवंत सुग्रीव बिभीषण सबही भाखे ॥ धनि धनि पवनकुमार प्राणतें सबके राखे ॥ कीश भालु कपि कटकके भयो न भावत भोर ॥ रामचंद्र चाहत उदय कपिकुल कुमुद चकोर ॥ कुमर ये कौंनके॥ ५७॥

इति श्रीरामदासवैष्णवकृत रामहरण अहिरावण-
लीला हनूमानविजय संपूर्ण ।

अथ सियासँदेशहनुमाननाटकप्रारंभः ॥

छन्द गीतिका चौपइया ।

पवनपुत्रको बोलि खोलि मुद्रिका गहाई ॥ जनकसुताके हाथ जाय दीजो यह भाई ॥ सीताकी सुधि लैनकों चले यहां बलवान ॥ पाय रजायसु रामकी हर्षित है हनुमान ॥ रजायसु रामकी ॥ १ ॥ महावीर बलवान तीर सागरके आयो ॥ किलकिलाय घन गर्जि तर्जि गिरि गगन उडायो ॥ पायक सायक रामकौ खलधायक

बल अंग ॥ लखलंक झपटन चल्यो बली बाज बजरंग॥ रजायसु रामकी ॥ २ ॥ पलमें पहुंच्यो पार पवनसुत वार न लायो ॥ ऊंचो पर्वत एक ताहि ऊपर चढि धायो ॥ लंका देखी जाय तब बंका बिकट मवास ॥ कंचनकोट उतंग अति निशिचर निकर निवास ॥ रजायसु राम-की ॥३ ॥ वन उपवन जहां ताल सुमन गण भँवर गुं-जारें ॥ शुक पिक मोर चकोर कोकिला करत कु-हारें ॥ यातुधान रजधानके देख कठिन कमठान ॥ अनुमानत हनुमान मन संध्या कियो पयान ॥ रजायसु रामकी॥४॥मसक समान सुजान भये हनुमान सिधाये॥ दरवाजेही धसत एक राक्षसी लखाये ॥ रे शठ कौन कुठौर हठ मोहि निदरक कित जाय ॥ चोर जहां लगि लंकके मैं सब डारे खाय ॥ रजायसु रामकी ॥ ५ ॥ इह सुनि खीजि कपीश ताहि मुष्टिकसों मारी ॥ पुरमें कियो प्रवेश रूप धरिकें मंजारी ॥ मंदिर मंदिर शोधि सब सुंदरि पाई नाहिं ॥ रावणके रावरि गयो रंगमहलके माहिं ॥ रजायसु रामकी ॥ ६ ॥ विभव देखि हनुमान हँस्यो अपने मन माहीं ॥ वरुण कुबेर सुरेश सदन

संपति इह नाहीं ॥ देखी सुख संपति सबै सीता पाई नाहिं ॥ मंदिरते बाहिर निकर कपि सोचे मनमाहिं ॥ रजायसु रामकी ॥ ७ ॥ लखि एक अद्भुत धाम नाम अंकित है द्वारे ॥ नव तुलसीके वृंद चकित हनुमान निहारे ॥ हरि मंदिर बानिक बन्यो सज्जन जान्यो जाय ॥ विप्ररूप धरि कपि तबै लीयो ताहि बुलाय ॥ रजायसु रामकी ॥ ८ ॥ तुरत बिभीषण आय पाँय द्विजवरके लाग्यो ॥ मिलन लगे हनुमान प्रेम दोऊ दिशि जाग्यो ॥ सकल बारता रामकी ताकों दई सुनाय ॥ सुनत बिभी-षण मगन मिलि सीता दई बताय ॥ रजायसु रामकी ॥९॥ सुनत चले हनुमंत शोक वन भीतर आये ॥ अतिलघु रूप बनाय जाय तरुपात लुकाये ॥ बैठी देखि अशोक-तरु सीता शोक संताप॥ दुखी देखि अति जानकी बंदर करत विलाप ॥ रजायसु रामकी ॥ १० ॥ कृश तन मैले वसनबार नहीं हार सह्मारे ॥ रटत रामगुणग्राम नैंन निज भूमि निहारे ॥ रामविरह व्याकुल महा पल पल कल्प विहाय ॥ हेरि हेरि हारे हियें हनूमान हहराय ॥

रजायसु रामकी ॥ ११ ॥ इतनेहीमें आय गयो रावण अहंकारी ॥ सीताको सतहरण संग लायो सब नारी ॥ वादविवाद कर्यो सबै टर्यो न सत इक टंक ॥ रावण रिस ह्वै घर गयो सीताशोकसशंक ॥ रजायसु रामकी ॥ ॥१२॥ रे अशोक तरु वीर शोक किनि मेरो टारै ॥ जारों यहीं शरीर देहि अब एक अँगारै ॥ करुणावानी सुनतही कपि मन माहिं विचारि ॥ करुणानिधि करकी तबै दई मुद्रिका डारि ॥ रजायसु रामकी ॥ १३ ॥ गिरी जानकी पास तुरत सो लई उठाई ॥ प्रीतमकी पहिचानि हर्ष उर शोक समाई ॥ मायारचित बनै नहीं सुर नर असुर अजीत ॥ को लावै एक मुद्रिका सीता शोक सभीत ॥ रजायसु रामकी ॥ १४ ॥ इतनेही हनुमान रामगुण वर्णन लागे ॥ सुनत भई दै कान दुसह दारुण दुख भागे ॥ कहन लगी को तू अहै प्रगट होय अब आप ॥ सुर नर असुरन में कोऊ तोकों देहों श्राप ॥ रजायसु रामकी ॥ १५ ॥ ता तरुवरतें उतरि तुरत हनुमत चलि आयो ॥ फिरि बैठी दै पीठ जोरि कर वचन सुनायो ॥ मनमति सोचै मात अब ये आये रघु-

नाथ ॥ मैं सेवक सुधि लैनकों पठयो मुद्रा साथ ॥ रजा-
यसु रामकी ॥ १६ ॥ मन वच क्रमकारि सुघर राम-
सेवक जब जान्यो ॥ समुही है सुख पाय मधुर बोली
मनमान्यो ॥ नैंननसों जल अति झरै करत बात बिल-
खाय ॥ कहि रे सुत सुखसों अहैं कुशल संग दोउ
भाय ॥ रजायसु रामकी ॥ १७ ॥ कुशल संग दोउ
भ्रात मात जनजीवन प्यारे ॥ तुम दुख दुखी अना-
थनाथ होत है हमारे ॥ वानर बल दल जोरिकें परे समु-
द्रकी पारि ॥ लैजै हैं माता तुम्हें दानव दलसंहारि ॥ रजा-
यसु रामकी ॥ १८ ॥ कहि सुत सब दलमाहि तोहि सम
सबही आने ॥ क्यों करि जीते जायँ विकट भट दीरघ
दाने ॥ इह सुनिकें हनुमाननें दीयो देह बढाय ॥ विकट
भयंकर रूप लखि सीय ससंकित जाय ॥ रजायसु
रामकी ॥ १९ ॥ हरण सीय संदेह देह निज रूप दि-
खायो ॥ तुरत कियो लघु देह जोरि कर आगे आयो ॥
सुनों मात कपिकटकमें छोटो मानत मोंहि ॥ लंक मारि
उलटी करों लै जाऊं अब तोहि ॥ रजायसु रामकी॥२०॥
आज्ञा मोहि न मात साथ अबही लै जाऊं ॥ दिन दश

धीरज धरौ फेरि तुमहींपै आऊं ॥ आवेंगे अब वेगही भवभंजन रघुवीर ॥ मात साथ करि लैंहिगे जिय जिन होउ अधीर ॥ रजायसु रामकी ॥ २१ ॥ जियमें भयो भरोस ज्ञान हनुमान सुनायो ॥ लखि बल बुद्धि विशाल सांच सीताके आयो ॥ कहन लगी अब होउ तू अति बल बुद्धि निधान ॥ करुणासिंधु कृपा करो मगन होत हनुमान ॥ रजायसु रामकी ॥ २२ ॥ माता मेरी जाति होत है बडी अभागी ॥ देखि रूख फल फूल भूख भारी अब लागी ॥ रखवारे भारे रहैं तू जिन तिन्है पत्याय ॥ मो ढिग आ बहु वेगही तात मधुर फल खाय ॥ रजायसु रामकी ॥ २३ ॥ आज्ञा लै हनुमंत जंतु ज्यों बाग सिधायो ॥ मनहु गर्जि गजराज कदलि-वन घनमें आयो ॥ तरुवर तोरे रोसकरि डारे रूख उ-खारि ॥ रखवारे मारे घने भाजे मीच पुकारि ॥ रजायसु रामकी ॥ २४ ॥ फोरि रौस रिसियाय फूल फुलवारि उपारै ॥ कियो बागको नाश रूख रूखनसों डारै॥ रख-वारे रोवत गये दशमुखके दरबार ॥ रावण रोस भयो

तबै पठयो अक्षकुमार ॥ रजायसु रामकी ॥ २५ ॥ हनूमान हुंकारि फारि एक रूख उखारयो ॥ आवत देख्यौ असुर अक्ष तासों गहि मारयो ॥ मारे बहु भागे घने कीनी जाय पुकार ॥ आयो एक बंदर बली मारयो अक्षकुमार ॥ रजायसु रामकी ॥ २६ ॥ सुत वध सुनिकें कोप कलह रिस रावण कीनो ॥ मेघनादकों बोलि संग दानवदल दीनो ॥ इतमें बल वानर छली उत अति असुर प्रचंड ॥ भिरे युगल गजराज ज्यों कीये वाज विहंड ॥ रजायसु रामकी ॥ २७ ॥ हनूमान हंकारि असुर उर मुष्टिक मारी ॥ परयौं भूमि तल घूंमि घरी इक देह विसारी ॥ कूदि चढ्यो वर वृक्षपै हनूमान हंकारि ॥ इंद्रजीत उठिकें तहां संधान्यों शर हारि ॥ रजायसु रामकी ॥ २८ ॥ ब्रह्मफांसमें पकरि ताहि तहांते लै आयो ॥ हनूमान अनुमान अपनपौ आप बँधायो ॥ लै आयो कपिकों पकरि रावणके दरबार ॥ कौतुक लागे लोग सब लंकाके लग वार ॥ रजायसु रामकी ॥ २९ ॥ मारत मुष्टिक लात हँसत सब दे दे तारी ॥ करयो चहै कपि खेल देह वज्जरकी धारी ॥ निर-

भय अति डर भय नहीं परसत ताहि न पीर ॥ करचो
चहै निज नाथको कारज कपि मतिधीर ॥ रजायसु
रामकी ॥ ३० ॥ रावण कहै रिसाय अरे कपि कहि तू
को है ॥ तू नहिं जानत मोहि तनकहू भय नहिं तोहै ॥
पठयो आयो कौनको तनक न कीनी कानि ॥ बाग वि-
गारचो कौन बल सुत मारचो को जानि ॥ रजायसु राम-
की ॥ ३१ ॥ लगी भूख अति मोहि तोरि तरुवर फल
खाये ॥ वानरजाति सुभाव जाहिसों रूख नवाये ॥ मा-
रन आये मोहिते मैं मारे तरु डारि ॥ पठयो आयो ता-
हिको हर लायो शठ नारि ॥ रजायसु रामकी ॥ ३२ ॥
रे कपि कुटिल कठोर जोर कितनो है तेरो ॥ सुरपति-
क्षत दिगपाल सदा मानत डर मेरो ॥ नर वानरकी कहा
चलै ये गिनतीमें नाहिं ॥ तपसिनके बल बावरे क्यों
बूडै दहमाहिं ॥ रजायसु रामकी ॥ ३३ ॥ अरे अंध
दशकंध निंद क्यों मेरईसै ॥ अखिल ईश जगदीश दशा-
नन तोहि न दीसै ॥ तिनकों तू तपसी कहै तेरे बडे अ-
भाग ॥ जो चाहै अपनौ भलौ दै सीता पग लाग ॥ रजा-
यसु रामकी ॥ ३४ ॥ कंदरमें करि वास अरे बंदर वन-

चारी ॥ तू कित जानै नीति राजकी रीति हमारी ॥ तप-
सिनकी इतनी कहै मेरे आगे आय ॥ बढि बोलैगो जो
कहूं लैहों खाल खिचाय ॥ रजायसु रामकी ॥ ३५ ॥
अरे निशाचर नीच मीच तैं हाथ बुलाई ॥ लै मिलि
सीता जाय लंककों लेहि रखाई ॥ रोस करें रण राम
जब सहै न तू शरभार ॥ वैरि बनावे बावरे रावण होयगो
ख्वार ॥ रजायसु रामकी ॥ ३६ ॥ रे वानर बौराय
कहा बल बात बनावै ॥ लैहों जीभ कढाय कुटिल मोकों
डर पावै ॥ जीव राखि अब आपनो तोकों डारूं मारि ॥
करत बड़ाई नरनकी जुरि करि बंदर धारि ॥ रजायसु
रामकी ॥ ३७ ॥ घर बैठेही असुर बात तोहि ऐसी आ-
वै ॥ कोपेंगे रण राम ठाम ढवकन नाहिं पावै ॥ लागत
बाण प्रचंड तन खंड खंड दश सीस ॥ न्यारी न्यारी
सिर भुजा लै जै हैं कपिकीस ॥ रजायसु रामकी ॥३८॥
मैं रावण बलवंड दंड लीने दिगपाला ॥ जीते जीते अ-
जीत भूमि भगि गये भुवाला ॥ सागर आडो है रह्यो
नातर लाऊं जाय ॥ दोऊ तपसी पकरि कर वानर धार
भगाय ॥ रजायसु रामकी ॥ ३९ ॥ सहस्रबाहुतें लियो

दंड हम जानत आछें ॥ लीयो जाय पातालदंड बलि-पैते पाछें ॥ वाली वानर दंड लियो करत रह्यो जहां जाप ॥ धनुष उठायो जनकपुर जानत बल हम आप ॥ रजायसु रामकी ॥ ४० ॥ इह सुनि मन सकुचाय देखि इत उतहि रिसानों ॥ मारो वानर वेग कही यह मो समुझानों ॥ हनूमान हँसिकें कही करयो चहूं प्रभुकाज ॥ अपने जीवन मरणकी मोहि कहा है लाज ॥ रजायसु रामकी ॥ ४१ ॥ रे कपि सांची कहै काज स्वामीको करई ॥ सबको देय रिझाय गांम घरघरमें फिरई॥ लाज न मानें काज लगि अपनी नारि बँधाय ।नांचि कूदि बँदरा मरे टूक जोग ना खाय ॥ रजायसु रामकी ॥ ४२ ॥अरे असुर सुनि अंध लाज तो हितन कनआई ॥ सूपनखाके नाक कान क्यों रह्यो कटाई ॥ जड जोगीको भेष धरि मांगत डोल्यो भीक ॥ छल करिकें सीता हरी लँघी न तोपै लीक ॥ रजायसु रामकी ॥ ४३ ॥ इह विष वाणी सुनत सकुचि खिजि खरो रिसानो ॥ मारहु शठकों वेग बकै बंदर बौरानों ॥ इतनेमें मंत्रीन तब हाथ जोरि समुझाय ॥ रिपुको दूत न मारिये राजनीति घटि जाय ॥

रजायसु रामकी ॥ ४४ ॥ रावण कहै रिसाय कहौ याकौं कहा कीजै ॥ कहन लगे सब लोग दंड याकों यह दीजै ॥ कपिकी ममता पूंछ पर ताकों देहु जराय ॥ पूंछहीन शठ जायगौ लावै नाथ चढाय ॥ रजायसु रामकी ॥ ४५ ॥ करन लगे सोइ यतन सूत सन रुई मंगाई ॥ भिजै भिजै घृत तेल खेल कपि पूंछ बढाई ॥ रुई सूत सन तेल घृत रह्यौ न नगर मंझार ॥ लियो लपेट लंगूर सब कौतुक कपि खिलवार ॥ रजायसु रामकी ॥ ४६ ॥ दीनी आगि लगाय लोग पाछें परिधायो ॥ तारि गारि दै और सबै पुर पास फिरायो ॥ उचकि चढे ऊंचे अटा पवन चलै उनचास ॥ बढी ज्वाल ज्यों गगनलों लागी लपट अकाश ॥ रजायसु रामकी ॥ ४७ ॥ कूदि कूदि कपि चढे महल मंदिर झलकारी ॥ लागे जरन अवास घास ज्यों अटा अटारी ॥ गरजि गगन घन ज्यों फिरैं हंकारे हनुमान ॥ कंचनके खसि खसि परें दर दिवाल दालान ॥ रजायसु रामकी॥ ४८ ॥ हाहाकार पुकार करें सब निश्चर नारी ॥ बालक वृद्ध जवान जीव लै भगें सुरारी ॥ गिरत गर्भ

गर्जत जरत यातुधान कुल कोस ॥ दीनी संकल गाय सब हनूमान मन रोस ॥ रजायसु रामकी ॥ ४९ ॥ उलटि पलटि चढि फेरि उलटि लंका सब जारी ॥ बच्यो बिभीषण धाम तनक नहिं खसी कनारी ॥ भक्तवत्सल भगवान भय ज्वाल करै नहिं जोर ॥ पानी है परसी तहां तातें खसी न कोर॥ रजायसु रामकी ॥५० ॥ एक एकसों कहैं देंहि रावणकों गारी ॥ शठ सीताको लाय करी यह कैसी ख्वारी ॥ यह ना हैं वानर बली कामरूप सुर कोय ॥ इतनी तौ अब करि चुक्यौं आगे कैसी होय ॥ रजायसु रामकी ॥ ५१ ॥ लंक जारि सब झारि सिंधुकी पारहि आयो ॥ तहां बैठि श्रम हारि लहरि लंगूर बुझायो ॥ लंकाते कपि कूदिकें आयो गरजि गँभीर ॥ वज्रपात जनु घात करि पर्‍यौ समुद्रके तीर ॥ रजायसु रामकी ॥ ५२ ॥ तनकी तपत बुझाय न्हाय सुख पाय सिरायो ॥ अति लघुरूप बनाय शरणि सीताकी आयो ॥ हाथ जोरि कपिने कही मात सीख दै मोहि ॥ अरे तात तू जात है दुखी देखिकें मोहि ॥ रजायसु रामकी ॥ ५३ ॥ रे सुत तोकों देखि तनक शी-

तल भई छाती॥ तूहू कहै अब जाउं मोहि सोइं दिन राती ॥ नैंन सिराने जाय लखि जरत रहे दिन रात ॥ जो तू अबही जात है मेरी कहा बस्यात ॥ रजायसु रामकी॥५४॥ कहियो कपि कर जोरि जोरि परणाम हमारो॥ कैसें करुणासिंधु कहत हैं नाम तुह्मारो॥एक मास मो अवधिकों सत्य कहों कपि तोहि॥जो कदापि आये नहीं जीवत पावो न मोरि॥ रजायसु रामकी ॥ ५५ ॥ बहत सजल दृग धार वचन कछु कहत न आवै॥ विरहाकुल कपि देखि देखि उर धीर धरावै॥लक्ष्मण लक्ष्मण वीरसों जो कछु होय सो होहि॥ कहियो रे कपि जाय तू जो बनि आवै तोहि॥ रजायसु रामकी॥५६ ॥ कर उर पलक लगाय मुद्रिका सिर धरि लीनी॥ चूडामणिहि उतारि आपनी कपिको दीनी॥ दीजो यह मो नाथकों हाथ पुत्र तू जाय॥ मो दुखिया तन देखि तू कहियो रे परिपाय॥ रजायसु रामकी॥५७॥ हनूमान हहराय गयो सुनी सीता वानी॥ व्याकुल कछु न बस्याय परै आंखिनते पानी॥ पैरयो चाहत प्रेम निधि ज्यों ज्यों

बूडत जात ॥ पग परि अज्ञा लै चल्यो पवनपूत पछि-
तात ॥ रजायसु रामकी ॥ ५८ ॥ सीता शोग स-
माग बागके बाहर आयो ॥ धरि निज रूप रिसाय
कूदि कपि गरज सुनायो ॥ धरकत उर निश्चरनके सुनि
धुनि संकित सर्व ॥ नारिनकी नारी छुटें फर्कत गिरि
गिरि गर्व ॥ रजायसु रामकी ॥ ५९ ॥ आये कूदिक
पार किलकिला शब्द सुनायो ॥ जामवंत नल नील दु-
विद अंगद मन भायो ॥ कारज करि आयो अभय
हँसे देखि हनुमान ॥ मिलन लगे कपि धायकें करि
करिकैं सनमान ॥ रजायसु रामकी ॥ ६० ॥यह
सुनि सुनि सुग्रीव रामसों जाय सुनाई ॥ आवत है
हनुमान खबरि लै लंक लगाई ॥ फटिक शिला बैठे दोऊ
लखन राम रणधीर ॥ कटि निखंग कांधे धनुष धरें करन
सरतीर ॥ रजायसु रामकी ॥ ६१ ॥ इतनेमें हनुमान
कपिन सँग पहुँचे आई ॥ परे रामके पाय तुरतही लिये
उठाई ॥ मिलि बैठे सब कपिनसों लक्ष्मणसहित कपीश॥
बहुरि मिले हनुमानसों हँसत कौशिलाधीश ॥ रजायसु
रामकी ॥ ६२ ॥ पूछन लागे बात तात कहि अतिगढ

बंका ॥ कैसें लांघे सिंधु पजारीका विधि लंका ॥ नाथ हाथमो माथपै ता प्रतापतें पाय ॥ मैं न लगाई लंकमें आपही लागी जाय ॥ रजायसु रामकी ॥ ६३ ॥ इत मुदरी लै गई मोहि मणि उतते लाई ॥ सुमिरण लांघ्यो सिंधु कहा कपिकी अधिकाई ॥ सुमिरणही मारे असुर ढ रे बाग विनास ॥ सुमिरण सीता मातकी सुधि लइ आयो दास ॥ रजायसु रामकी ॥ ६४ ॥ मांगी मणि कपि दई लई कर कंठ लगाई ॥ पूछ न सकत सँदेश दृगन धारा बहि आई ॥ कमलकोशते मनुहु अति झरत ओसकौ नीर ॥ मणिमाहूं देखत रहे सोचत हैं रघुवीर ॥ रजायसु रामकी ॥ ६५ ॥ सीताविरह विशाल हाल हनु-मान सुनायो ॥ ह्वै आये दृग लाल सुनत जनपाल रिसा-यो ॥ कुटुमसहित दशकंधको कुटुमहुं सहित सहाय ॥ लेहुं जानकी जाय अब बोले राम रिसाय ॥ रजायसु रामकी ॥ ६६ ॥ हाथ जोरि हनुमंत कहै अब आज्ञा पाऊं ॥ कुटुमसहित सब लोग लंकके जीवत लाऊं ॥ सागरके फंका करूं लंका लेहुं उपारि ॥ होय रजायसु रामकी रावण डारूं मारि ॥ रजायसु रामकी ॥ ६७ ॥

डऱ्यो माथपर हाथ रंग रघुनाथहि दीयो ॥ अरे पुत्र परिणाम कामतें ऐसोही कीयो ॥ कहा देहुं अब तोहि मैं कछू न लायक तोहि ॥ लक्ष्मणते प्यारो अधिक तू लागत है मोहि ॥ रजायसु रामकी ॥६८॥ धनि धनि तू हनुमान कठिन कारज करि आयो ॥ महावीर बलवान कियो सब कौ मन भायो ॥ यह नाटक हनुमंतकौ कहै सुनै नर कोय ॥ ज्ञान ध्यान बलवान बुधि उक्ति उदय उर होय ॥ रजायसु रामकी ॥ ६९ ॥

इति श्रीसियासँदेश हनुमाननाटक रामदासवैष्णवकृत संपूर्ण ।

अथ रामकरुणानाटकप्रारंभः ।

छंद हरिगीत ।

सुमिर राम छवि चंदकाम पूरण सुखसागर ॥ पूरण कला प्रकाश उदय उर होत उजागर ॥ करें हेत कर जोरिकें करूं कविन परणाम ॥ वर्णहु बल हनुमानकौ लक्ष्मणकौ संग्राम ॥ राम करुणा करें ॥ १ ॥ लक्ष्मण सँग हनुमंत हँके रणमें समुहाये ॥ इंद्रजीत अरि आय

समरमें बाण चलाये ॥ काटि बाण हनुमाननें मुष्टिक मारचो जाय ॥ परचो घूंमि रणभूमिमें रथते दियो गिराय ॥ राम करुणा करें ॥ २ ॥ उठचो असुर अकुलाय कोपिकर लई रिसाई ॥ छांडी शक्ति कराल काल ज्यों कपि समुहाई ॥ आडे लक्ष्मण ह्वै गये निकरि गई उर पार ॥ वीरघातिनी सांगिसों घायल भये कुमार ॥ राम करुणा करें ॥ ३ ॥ मेघनाद गल गर्जि गदा हनुमत उर मारी ॥ घूंमि घूंमि नाहिं परे देह डर रहे सह्मारी ॥ हनूमान हंकारि अरि मारचो मुष्टि रिस्याय ॥ परचो धरणितल नाद घन लक्ष्मण लियो उठाय ॥ राम करुणा करें ॥ ४ ॥ लै लक्ष्मणको गोद गरजि कपि कटकहि आये ॥ देखि दूरिते राम छोडि आसनकों धाये ॥ लै लक्ष्मणकों अंकमें आसन दीये स्वाय ॥ मरम टटोरत अंगके अंग अंग अकुलाय ॥ राम करुणा करें ॥५॥ राम जगावत जात तात केहि विधि नहिं जागें ॥ देखि वीरकी ओर तीरसे उरमें लागें ॥ लखि लखि लक्ष्मण वीरकों उरमें बाढत पीर ॥ पल पल होत अधीर अति सुभट राम रणधीर ॥ राम करुणा करें ॥ ६ ॥ जामवंत सुग्रीव

विभीषण अंगद आये ॥ जूथप जुरे समाज राम सबने
समुझाये ॥ कहत विभीषण जोरि कर सुनहु राम रघु-
राय ॥ लंका वैद सुषेण हैं लक्ष्मण देंहि जिवाय ॥ राम
करुणा करें ॥ ७ ॥ तुरत चले हनुमान राम अनुशासन
पाई ॥ लंका गये निसंक अंकमें संक न आई ॥ लाये
सहित उठाय घर वैद सुषेण बुलाय ॥ नारी लक्ष्मण वीर-
की देखी जानें आय॥राम करुणा करें॥८॥द्रोणागिरि कोउ
जाय जडी संजीवन लावे ॥ राति न जाय विहाय सूर ऊगन
नाहिं पावै ॥ लाय जडी मुखमें करें जागें लक्ष्मण वीर ॥ यह
उपाय अब कीजिये वेग राम रणधीर॥राम करुणा करें॥९॥
लंकाको लै वैद जहांको तहां पहुंचायो ॥ हनूमान कर
जोरि रामके आगे आयो ॥ राम रजायसु होय अब लाऊं
जीवन मूर ॥ विलम न करि हों शीघ्रही होय मनोरथ
पूर ॥ राम करुणा करें ॥ १० ॥ अहो तात तुम जात
प्रात पहलेंही आवो ॥ मायावी निशि फिरें असुर मति
तिन्हें पत्यावो ॥ सुमिर राम रघुवीर उर तुरत चले हनु-
मान ॥ रामबाण मानहु छुट्यो करते लखि संधान ॥ राम
करुणा करें ॥ ११ ॥ रावण यह सुधि पाय असुर एक

बोल्यो तानें ॥ कालनेम तिहि नाम बहुत माया करि जानें ॥ तासों दशमुख इह कही मग माया करि जाय ॥ हनूमानकों भोर ज्यों राखै तहां भुलाय ॥ राम करुणा करें ॥ १२ ॥ इह सुनिकें सो असुर जाय मग ठगई कीनी ॥ मुनिको भेष बनाय तिलक माला कर लीनी ॥ प्यास पवनसुतकों लगी देखि विमल विश्राम ॥ मुनि मग बैठ्यो देखकें कीनी कपि परनाम ॥ राम करुणा करें ॥ १३ ॥ हनूमान हँसि कही मोहि मुनि पानी प्यावो ॥ दीयो सलिल बताय जाय पीयो ढिग आवो ॥ ज्ञान देंहुं तोकों घनों जो तेरे मनभाय ॥ इच्छा दें रक्षा करों सब इच्छा फल जाय ॥ राम करुणा करें ॥ १४ ॥ लीये वचन भराय जाय जब पानी पीयो ॥ पकऱ्यो मछली आय पाँय पानी जो दीयो ॥ मारी मुष्टिक ताहिकें तुरत भई तन भंग ॥ रही राक्षशी श्रापवश भई उर्वशी अंग ॥ राम करुणा करें ॥ १५ ॥ रामदूत पहिचानि उर्वशी अस्तुति कीनी ॥ कपिकी बात बुझाय सबै अपनी कहि दीनी ॥ कालनेम इह असुर है तू जिन याहि पत्याय ॥ गई स्वर्गसो उर्वशी हनूमान समुझाय ॥ राम करुणा

करें ॥ १६ ॥ आये पवनकुमार तहां मुनि कपट खि-
लारी ॥ हनूमान हँसि कही कहो मुनि रजा तिहारी ॥
रक्षा देहु कि लेहुगे सो इच्छा कहि देहु ॥ तुम तो पाछें
दीजियो मोते पहिलें लेहु ॥ राम करुणा करें ॥ १७ ॥
इतनी कहि कपि धाय ताहि मुष्टिकसों मारयो ॥ दानव
उठ्यो घुमाय कपटको भेष बिगारयो ॥ डारी भुजा
उखारिकें परयो भूमि भहराय ॥ सीस तोरि फेंक्यो
परयो सो लंकामें जाय ॥ राम करुणा करें ॥ १८ ॥
ताहि मारि हनुमान हँक्यो उत्तर दिशि धायो ॥ पवन
पूतपर चड जाय पर्वत नियरायो ॥ गई जामि युग जा-
मिनी राम उठे अकुलाय ॥ कहन लगे करुणा बचन
लक्ष्मणकों उर लाय ॥ राम करुणा करें ॥ १९ ॥ अहो
वीर कहि पीर कहां तेरे उर माहीं ॥ तो बिन बोलें तनक
मोहि पलहू कल नाहीं ॥ कहा करों मोसों कहो अब उठि
होत विहान ॥ जागहु बलि जामिनि गई मेरे जीवनप्रान॥
राम करुणा करें ॥ २० ॥ उठी अब पीवहु दूध भात
टेरत तोहि भाई ॥ चलि करि बाग विहार वीर सरजूमें
न्हाई ॥ भरत वीर बोलत तुह्मैं रिपुसूदन संग लाय ॥

टेरत हैं तुमकों चलौ खेलन बनमें जाय ॥ राम करुणा करें ॥ २१ ॥ जुरि आये सब सखा पौरि पर तोहि बुलावें ॥ उठो धनुष कर लेहु चलौ कहूं धेनु चरावें ॥ गुरु आये आदर करो उठि अब लखनकुमार ॥ भोर भयो भूपति जगे भूसुर करत उचार ॥ राम करुणा करें॥२२॥ सकल भांति भरमाय कुमर नाहिं जगत जगाये ॥ ज्यों ज्यों राति विहाय राम त्यों त्यों हहराये ॥ बात बातके साथ ही नैननसे जल जात ॥ फफकत कहि कहि कुमर ज्यों पीपरकेसे पात ॥ राम करुणा करें ॥ २३ ॥ अहो तात बलि जात कुमर कहा करूं बड़ाई ॥ तजे पिता अरु मात मोहि लग तेरे भाई ॥ संपति देश विदेश बन कठिन कलारकी चाल ॥ सहि संकट मो सँग रह्यौ सदा करत प्रतिपाल ॥ राम करुणा करें ॥ २४ ॥ लरिकापनहूं लाल कछू अरवी नहिं कीनी॥जो कछु कारज कियो मांगि आज्ञा मोहि लीनी ॥ झूंठें हूं रूठे कहीं कबहुं न लक्ष्मण लाल ॥ अब मोसों बोलत नहीं क्यों रूठे हौ लाल ॥ राम करुणा करें ॥ २५ ॥ मैं जानत हूं कुमर तपस्या तुमने कीनी ॥ चौदह वर्ष विहाय गये मैं खबरि

न लीनी ॥ भूख प्यास निद्रा तजी लोभ मोह मद काम ॥ मोहित लग इतनी करी व्याकुल बोलत राम ॥ राम करुणा करें ॥ २६ ॥ यह तौ शक्ति प्रचंड वीर ऐसो को झेलै ॥ जो इतनी करि लेय पहल याकौ सौ खेलै ॥ इतनी करि हारे नहीं मोहित दीये प्रान ॥ अव तो विन कैसें जिउं कहौ वीर वलवान ॥ राम करुणा करें ॥ २७ ॥ कर्महीन मैं दीन भयो अव तोविन भाई ॥ वली वंधु मरवाय निवल निज नारि गँमाई ॥ लोग नाम धरि हैं सवै कहां रहूं अव जाय ॥ नारि हराई निलजतें आयो वंधु मराय ॥ राम करुणा करें ॥ २८ ॥ कहा कहूंगो अवधि जाय अव तोविनु भाई ॥ सव पूछेंगे लोग कहां लक्ष्मण रघुराई ॥ कहा कहों तिनसों अवै फिर पूछैगी माय ॥ हनुमतहू आयो नहीं कहत राम हहराय ॥ राम करुणा करें ॥ २९ ॥ अहो वीर अव वोलि तनक मो दुख तन देखो ॥ तो विनु तनक न मोहि कहूं काहूसों लेखो ॥ लै विराग वन वन फिरूं तो विन लक्ष्मण वीर॥ अवधि न देखों जन्मभरि करि हों अंत शरीर ॥ राम करुणा करें ॥ ३० ॥ नहिं आवै हनुमान भानुकौ भयो

उजेरो ॥ जरूं तातके साथ प्रात इह प्रण है मेरो ॥ ऐसे कहि कहि कुमरसों सुभट राम रणधीर ॥ नैनन जल झरि झरि परै पल पल होत अधीर ॥ राम करुणा करें ॥ ३१ ॥ जामवंत सुग्रीव विभीषण वैठे पासा ॥ सब समुझावत राम करत हनुमतकी आसा ॥ पहुँच्यो पवन-कुमार तब द्रोणागिरिके पास ॥ जागि उठीं सबही जड़ी जगमग होत प्रकास ॥ राम करुणा करें ॥ ३२ ॥ पर्वत लियो उठाय रोस करिकें कपि भारी ॥ उलटी लई कुलहाट गगन धायो गिरिधारी ॥ अवधि ऊपरें आवतौ लख्यौ भरत उजियार ॥ दानों जानि कमान लै मार्यौ बाण करार ॥ राम करुणा करें ॥ ३३ ॥ राम राम कहि गिर्यो गगनते कपि गिरिधारी ॥ देखि रामकौ दूत भरत अति भये दुखारी ॥ उठि उर लियो लगाय कपि पूछन लागे बात ॥ कृपासिंधु कहा करत हैं मोहि सुनावहु तात ॥ राम करुणा करें ॥ ३४ ॥ सुनि लक्ष्मणकी बात हाथ मीडत बलदाई ॥ परे धरणि धुनि माथ तात कहि कहि अकुलाई ॥ आंखिनते आंसू परें पीर न हृदय समाय ॥ देखि भरत व्याकुल कही हनुमान समझाय ॥

राम करुणा करें ॥ ३५ ॥ अहो भरत बलवीर पीर मेरे पग भारी ॥ पल पल होत अबेर जाउं का विधि गिरि-धारी ॥ लैकर धनुष लगाय शर साध्यो भरत बनाय ॥ बाण बैठि कपि गिरिसहित तोहि देहुं पहुंचाय ॥ राम करुणा करें ॥ ३६ ॥ लै गिरिवर हनुमान बाणपै बैठे आई ॥ कहां डारूं कपि कहो तीरपर लियो तुलाई ॥ उतरि बाणते तुरंतही कहन लगे हनुमंत॥ करहु कृपा आज्ञा अबै पहुचों तहां तुरंत ॥ राम करुणा करें॥३७॥ अहो तात तुम जाहु वेगि मति देर लगाओ॥ करिकें सोई यतन जाय लक्ष्मणकों ज्याओ ॥ विनती मेरी नाथसों करियो माथ नवाय ॥ दीन जानि करि हैं कृपा कब मोपै दोउ भाय ॥ राम करुणा करें ॥ ३८ ॥ धनि धनि लक्ष्मण वीर धीर तू अति बडभागी ॥ तजे काम सुख धाम रामपदको अनुरागी ॥ मांगि सीख शुभ भरतते तुरत चले हनुमान ॥ जात सराहत भरतकों बल बुधि प्रेमनिधान ॥ राम करुणा करें ॥ ३९ ॥ इहां राम अकु-लाय रैनि रहि गई कछु थोरी ॥ ज्यों जलनि घटै मीन दीन विधि विना चकोरी ॥ काटे पंख पखेरुवा मणिबिनु

फणि अकुलाय ॥ हेरि हेरि हनुमान मग रहे राम हहराय॥ राम करुणा करें ॥ ४० ॥ सुनहु सखा सुग्रीव समझि संदेह न यामें ॥ वानर देह पठाय वीन वन चंदन लामें ॥ रचहु चिता अब आय सब तापर बैठें जाय ॥ लै लक्ष्मणकों गोदमें दीजो अगनि लगाय॥ राम करुणा करें ॥ ॥४१॥ इतनी कहि रहि गये सुनत सब ज्वाब न दीनों ॥ कहि कहि करुणा वचन लाय लक्ष्मण उर लीनों ॥ इतनेही हनुमान चलि आय गये तिहिवार॥ बूडतते दुख धारमें मानहु मिल्यो अधार ॥ राम करुणा करें ॥४२ ॥ आय गये हनुमान हरष सबके उर छायो॥ सबकी जीवन जरी प्राणको पर्वत लायो ॥ सरजीवन सब जीवकी दई कुमरको प्याय ॥ राम राम करते उठे राम लिये उर लाय ॥ राम करुणा करें ॥ ४३ ॥ मानहु प्रेम सनेह देह धरि दोऊ भाई ॥ बिछुरि मिले जिमि मित्र कंठसों कंठ लगाई ॥ फटिक शिला बैठे दोऊ मगन मनोहर वीर ॥ मानहु वीर संहारने नरके धरे शरीर ॥ राम करुणा करें॥ ॥ ४४ ॥ परत पांय हनुमान राम उर लिये लगाई ॥ मिले लखनसों धाय कंठसों कंठ लगाई ॥ मिले सकल कपि

यूथपति लखन राम हनुमान ॥ कहत सबै वजरंगसों घनि बलबुद्धि निधान ॥ राम करुणा करें ॥ ४५ ॥ हाथ जोरि हनुमान भरतकी बात्त सुनाई ॥ नैननमें भरि नीर कुशल पूछत दोउ भाई ॥ कहि कपि कहां भेटा भई तोहि भरतसों आय ॥ सुनि सुनि तिनकी वारता राम रहे सकुचाय ॥ राम करुणा करें ॥ ४६ ॥ सकुचि राम रघुवीर करत हनुमान वडाई॥ अहो तात सुत वात करी सब भाँति भलाई ॥ प्राण पयानो करत है तैं राखे हनुमान ॥ तोहि कहा अब देहुं मैं मोहि दियेतैं प्रान ॥ राम करुणा करें ॥ ॥ ४७॥ लाय सजीवन मूरि वंधुतैं ज्यायो भाई ॥ संकटमें समुदाय करी तैं सबै सहाई॥ वेर कुवेर अंधेरहू नेंक न कीनी वार ॥ तू प्यारो मोहि भरततैं भारों पवनकुमार ॥ राम करुणा करें ॥ ४८ ॥ सुनत भालु कपि कीश सुनत सबके मन भाये ॥ कृपासिंधु भगवान करत नर चरित सुहाये ॥ हाथ धऱ्यो हनुमानके माथे ढिग बैठाय॥ अभय भयो भय मिटि गयो ठोकी पीठ बजाय ॥ राम करुणा करें ॥ ४९ ॥ सकल राम रुख पाय आय आसनपै सोये ॥ वानर रीछ लंगूर राम रसके वश भोये ॥ शयन

करी करुणानिधे रही जामिनी जाम॥ लक्ष्मण ऊपर हाथ धरि करत राम आराम॥ राम करुणा करें॥ ५० ॥आलस रसवश राम कछु कलैइ न लगि आये ॥ भँवरसहित जनु सांझ कमलरस संपुट लाये ॥ चौकीकों हनुमंत तब ठाढे ह्वै गये आय ॥ सेना चारिहु ओरते लियो लँगूर फिराय ॥ राम करुणा करें ॥ ५१ ॥ उदय भयो इत भोरसहित रवि रैन सिरानी ॥ झलकी किरणी कलिन्द जगे जग सारँगपानी ॥ नित्यकर्म करि कुमर दोउ आये आसन पास ॥ कटि निखंग कर शर धनुष बैठे कमल खुलास ॥ राम करुणा करें ॥ ५२ ॥ जामवंत हनुमंत द्विविध अंगद नल नीला ॥ दधिमुख कुमुद मयंद केशरी सहज सुशीला ॥ गज गवाक्ष सुग्रीव सब सहित बिभीषण आय ॥ जूथप जे ते रामकों बैठे सीस नवाय ॥ राम करुणा करें ॥ ५३ ॥ लीने बाण कृपान लखन कछु कहत रिसाये ॥ तनमें तमकै तेज लाल लोचन ह्वै आये ॥ मारहुं अरि अब जायके मोहि रामकी आनि ॥ इंद्रजीत आरि असुरके लाऊं काटि कृपानि॥ राम करुणा

करें ॥ ९४ ॥ जौ शिव शंकर करै असुरकी आय सहाई॥ तौ नहीं छांडौं ताहि जाय शंकर शरणाई ॥ राम रजाय सुदेहु अब मारों असुर प्रचारि ॥ खंड खंड करि अरि-भुजा लाऊं सीस उतारि ॥ राम करुणा करें ॥ ९५ ॥ कहत राम रणधीर लखन तुम याही लायक ॥ बचै न काहू शरणि करण खलकुलके घायक ॥ कालि मारिहूं जाय अरि आजु करो मति रारि ॥ उठे राम कर पकरिकैं लखन लिये बैठारि ॥ राम करुणा करें ॥ ९६ ॥ मनुज-चरित अनुहारि रारि इह लक्ष्मण कीनी ॥ नर नाटक गुणग्राम राम करुणारस भीनी ॥ जो याकों सीखे सुनै उदय होय उर ज्ञान ॥ जाकी सदा सहायकों आय करें हनुमान ॥ राम करुणा करें ॥ ९७ ॥ कालिन्दीके कूल जहां अर्गल पुर राजै ॥ निर्मल जल करि पान पाप देखत अतिभाजै ॥ राधाकृष्ण मो नाम है सज्जन करत बखान ॥ उदर हेत बहु श्रम करै निजइच्छा अनुमान ॥ भरोसे रामके ॥ ९८ निश्चय करि विश्वास भरोसौ हरिकौ जानें ॥ हरिभक्तनकौ नेम यही संशय नाहिं मानें ॥ लीला

परम अनूप यह हरिजनके हितकारि ॥ भूल कहूं जो होय तौ लीजै चतुर सुधारि॥ भरोसे रामके॥८९॥बोलो, सियावर रामचद्रकी जै; पवनसुत हनुमानकी जय ॥

इति श्रीरामकरुणानाटक संपूर्ण ।



पुस्तकें मिलने के स्थान :-

१. खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
सातवीं खेतवाड़ी खम्बाटा लेन
बम्बई-४०० ००४

२. गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्या बाई चौक, कल्याण,
(जि० ठाणे-महाराष्ट्र)

३. खेमराज श्रीकृष्णदास, चौक-वाराणसी (उ. प्र.)

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS